Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

सेवारत शिक्षकों और बी.एड. प्रशिक्षुओं की धारणा और जागरूकता का स्तर

Ritu Chauhan[1]*, Dr. Bharat Ranjan[2]

[1] Research Scholar, The Glocal University Saharanpur, UP

[2] Research Supervisor, The Glocal University Saharanpur, UP

सार* - *इस अध्ययन में, हम बी.एड. करने वाले संभावित शिक्षकों के दृष्टिकोण और जागरूकता के स्तर को देखते हैं। अध्ययन प्रश्न इन शिक्षकों के शिक्षण के साथ-साथ समकालीन शैक्षिक प्रथाओं और नीतियों के बारे में उनके ज्ञान के बारे में पूछताछ करते हैं। कुछ छात्र शिक्षकों ने शैक्षिक अनुसंधान में सक्रिय रूप से संलग्न होकर और वर्तमान रुझानों के साथ वर्तमान में रहकर गहन ज्ञान और जागरूकता का प्रदर्शन किया, जबकि अन्य ने आजमाई हुई सच्ची प्रथाओं और प्रक्रियाओं से चिपके रहकर एक उथली समझ और जागरूकता का प्रदर्शन किया। यह पाया गया कि प्रशिक्षु शिक्षकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, प्रासंगिक संसाधनों की उपलब्धता, और व्यावसायिक विकास के अवसरों के प्रति उनके संपर्क जैसे चरों ने उनकी धारणा और जागरूकता के स्तर को प्रभावित किया। यह अध्ययन इस बात की जाँच करके ज्ञान के कोष में योगदान देता है कि पूर्व-सेवा प्रशिक्षक अपने परिवेश को कैसे देखते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं। यह तेजी से बदलते शैक्षणिक माहौल में विविध पृष्ठभूमि के छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अगली पीढ़ी के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर बल देता है।

कीवर्ड* - *सेवारत शिक्षक, बी.एड. प्रशिक्षुओं, धारणा, जागरूकता

---x---

1. परिचय

शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की डिग्री अर्जित करने वाले प्रशिक्षु प्रशिक्षकों का परिप्रेक्ष्य और जागरूकता स्तर शिक्षकों के रूप में उनकी प्रभावकारिता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। जैसे-जैसे शिक्षा का क्षेत्र विकसित होता है, प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रथाओं और सरोकारों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होना महत्वपूर्ण है। हम प्रशिक्षु शिक्षकों की धारणा और जागरूकता के स्तर की जांच करके शिक्षण पेशे की मांगों के लिए प्रशिक्षु शिक्षकों की तत्परता के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। एक शिक्षक का कर्तव्य बहुआयामी होता है, जिसके लिए न केवल विषय ज्ञान बल्कि शैक्षणिक कौशल, कक्षा प्रबंधन प्रतिभा और छात्र आवश्यकताओं की एक विस्तृत श्रृंखला की समझ की भी आवश्यकता होती है। प्रशिक्षु शिक्षक बीएड शुरू करते हैं। शिक्षण और सीखने के बारे में पहले से मौजूद विचारों वाला कार्यक्रम जो शिक्षकों के रूप में उनकी भविष्य की स्थिति के बारे में उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। यह दृष्टिकोण उनकी प्रेरणा, समर्पण और शिक्षण तकनीक को प्रभावित करता है।[1]

धारणा के अलावा, जागरूकता का स्तर एक शिक्षक की प्रभावकारिता के लिए महत्वपूर्ण है। वर्तमान शैक्षिक प्रथाओं का ज्ञान, अनुसंधान-आधारित तकनीकें, और क्षेत्र में बढ़ती चिंताएँ सभी जागरूकता का हिस्सा हैं। एक शिक्षित शिक्षक सूचित निर्णय ले सकता है, विभिन्न शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण दृष्टिकोण समायोजित कर सकता है और शिक्षा की समग्र उन्नति में योगदान दे सकता है। प्रशिक्षु प्रशिक्षकों की धारणाओं और जागरूकता की डिग्री को समझना विभिन्न कारणों से महत्वपूर्ण है। शुरुआत के लिए, यह हमें भविष्य के शिक्षकों के प्रशिक्षण में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। यदि प्रशिक्षु शिक्षकों के पास ज्ञान की कमी है या शिक्षण पेशे के बारे में गलतफहमियाँ हैं, तो यह उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण में अंतराल का सुझाव दे सकता है। इन अंतरालों की पहचान करने से

www.ignited.in

पाठ्यक्रम निर्माण और निर्देशात्मक अभ्यासों को निर्देशित करने में मदद मिल सकती है, जो प्रशिक्षु शिक्षकों को उनके भविष्य के व्यवसायों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करेंगे।[2]

प्रशिक्षु शिक्षकों की धारणा और जागरूकता के स्तर की खोज तेजी से बदलते शैक्षिक परिदृश्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए उनकी तैयारी में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। शैक्षिक अभ्यास और सिद्धांत लगातार विकसित होते हैं, प्रौद्योगिकी में प्रगति, शोध निष्कर्षों और सामाजिक आवश्यकताओं को स्थानांतरित करने से प्रभावित होते हैं। शिक्षकों को इन परिवर्तनों के बारे में जागरूक होने और तदनुसार अपनी शिक्षण विधियों को अपनाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षु शिक्षकों की धारणा और जागरूकता के स्तर का छात्रों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। जिन शिक्षकों के पास अपनी भूमिका की सकारात्मक धारणा है और उच्च स्तर की जागरूकता है, वे चिंतनशील प्रथाओं, व्यावसायिक विकास और नवीन शिक्षण दृष्टिकोणों में संलग्न होने की अधिक संभावना रखते हैं। बदले में, यह छात्रों के सीखने के परिणामों और समग्र शैक्षिक अनुभवों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।[3]

2. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की अवधारणा

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों और उन शिक्षकों के लिए विकसित गतिविधियों को संदर्भित करता है जो वर्तमान में शैक्षिक प्रणाली में कार्यरत हैं। सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण के विपरीत, जो लोगों को शिक्षण पेशे में उनके पहले प्रवेश के लिए तैयार करता है, सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण अभ्यास करने वाले शिक्षकों के ज्ञान, कौशल और दक्षताओं में सुधार करने का प्रयास करता है। सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को उनके चल रहे व्यावसायिक विकास में सहायता करना है। यह स्वीकार करता है कि शिक्षण एक गतिशील पेशा है जो शिक्षकों को शोध-आधारित प्रथाओं, शैक्षिक प्रवृत्तियों को विकसित करने और पाठ्यचर्या संबंधी आवश्यकताओं को बदलने के लिए वर्तमान होने की आवश्यकता है। सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रशिक्षकों को नई जानकारी प्राप्त करने, उनके निर्देशात्मक कौशल में सुधार करने और शिक्षण रणनीति के अपने भंडार को व्यापक बनाने की अनुमति देता है।[4]

अल्पकालिक कार्यशालाएं और सेमिनार से लेकर दीर्घावधि पाठ्यक्रम और परामर्श प्रयास, ये सभी सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उदाहरण हैं। शैक्षिक संस्थान, सरकारी एजेंसियां, गैर-लाभकारी संगठन और पेशेवर शिक्षक समूह अक्सर ये कार्यक्रम प्रदान करते हैं। वे कुछ विषय क्षेत्रों, निर्देशात्मक विधियों, तकनीकी एकीकरण, मूल्यांकन पद्धतियों, कक्षा प्रबंधन तकनीकों, या विभिन्न शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। भाग लेने वाले प्रशिक्षकों के व्यक्तिगत लक्ष्यों और आवश्यकताओं के आधार पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सामग्री और संरचना भिन्न हो सकती है। व्याख्यान, इंटरैक्टिव वर्कशॉप, हाथों पर अभ्यास, सहयोगी परियोजनाएं, सहकर्मी अवलोकन, या ऑनलाइन शिक्षण मॉड्यूल का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रमों का उद्देश्य व्यावहारिक और प्रासंगिक होना है, जिससे प्रशिक्षकों को विशिष्ट तरीके और संसाधन मिलते हैं जिनका वे अपनी कक्षाओं में तुरंत उपयोग कर सकते हैं।

सेवाकालीन प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है जो एक बार की घटना के बजाय एक शिक्षक के कार्यकाल के दौरान होती है। यह प्रशिक्षकों के बीच चिंतनशील अभ्यास, स्व-मूल्यांकन और स्व-निर्देशित सीखने को बढ़ावा देता है। शिक्षक बदलती शैक्षिक स्थितियों के अनुकूल हो सकते हैं, अपने विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक संभाल सकते हैं, और अपने ज्ञान और क्षमताओं को नियमित रूप से उन्नत करके शैक्षिक गुणवत्ता में सामान्य प्रगति में योगदान कर सकते हैं। सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के विभिन्न लाभ हैं। यह शिक्षकों में पेशेवर विकास और कार्य संतुष्टि को प्रोत्साहित करता है, जिससे कक्षा में प्रेरणा और भागीदारी में सुधार होता है। यह शिक्षण की गुणवत्ता में भी सुधार करता है, जिससे छात्रों के सीखने के बेहतर परिणाम मिलते हैं। इसके अलावा, सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षकों के बीच सहयोगी और ज्ञान साझा करने की संस्कृति विकसित करता है, जिसके परिणामस्वरूप एक सहायक पेशेवर समुदाय बनता है।[5]

दूसरी ओर, सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी, पर्याप्त संसाधनों और निरंतर समर्थन की आवश्यकता होती है। व्यक्तिगत मांगों और समस्याओं के लिए प्रशिक्षण गतिविधियों का मिलान करना महत्वपूर्ण है जो शिक्षक अपनी विभिन्न स्थितियों में अनुभव करते हैं। इसके अलावा, प्रशिक्षण के बाद की सहायता और प्रतिबिंब के अवसर यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी और कौशल का अभ्यास में उचित उपयोग किया जाता है।[6]

www.ignited.in

3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता

प्रत्येक पेशे को अपने उचित कामकाज के लिए प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य के लिए विभिन्न प्रकार के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम सेमिनार, कार्यशाला, चर्चा, संगोष्ठी, अभिविन्यास कार्यक्रम और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में आयोजित किए जाते हैं। इन-सर्विस शिक्षा और प्रशिक्षण यानी INSET को सेवा-पूर्व शिक्षा की तुलना में सबसे लंबा और अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह जीवन भर सीखने की प्रक्रिया है।[7]

विषयवस्तु क्षेत्रों, स्कूली पाठ्यक्रम, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य और शिक्षकों की नौकरी की अपेक्षाओं में तेजी से और अग्रिम परिवर्तनों के कारण अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षण पेशे में इसकी आवश्यकता सबसे महत्वपूर्ण है। एनपीई (1986) ने सही कहा है, " कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।" ऐसे में शिक्षकों पर बड़ी जिम्मेदारी है। आज, किसी पूर्व योग्यता, प्रशिक्षण और अनुभव के साथ एक सामान्य शिक्षक का कार्य भी पहले से अधिक चुनौतीपूर्ण और चुनौतीपूर्ण हो गया है। इसलिए, INSET शैक्षिक प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार लाने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वास्तव में हमारे देश में सेवाकालीन शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता तब से लगातार महसूस की जा रही है जब से यह स्वतंत्र हुआ है। जैसा कि यूजीसी (1949) ने महसूस किया, "यह असाधारण है कि हमारे स्कूल के शिक्षक 24-25 वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले जो भी विषय पढ़ाते हैं, उसे सीख लेते हैं और उनकी आगे की शिक्षा का अनुभव करने के लिए छोड़ दिया जाता है, जो कि ज्यादातर मामलों में ठहराव का दूसरा नाम है।" इसलिए, शैक्षिक विचारों और विकासात्मक रणनीतियों को बदलकर आज प्रशिक्षित शिक्षकों को भी पुराना और कम प्रभावी बना दिया गया है।

भारत और विदेश में विभिन्न नीतियों, सम्मेलनों, समितियों और आयोगों द्वारा सेवाकालीन शिक्षा और शिक्षकों के प्रशिक्षण के महत्व को महसूस किया गया है और जोर दिया गया है। डायमंड (1991) का कहना है कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेवारत शिक्षकों को कौशल, योग्यता, दृष्टिकोण, ज्ञान और अन्य व्यवहार के प्रदर्शनों की सूची से लैस करते हैं जो उन्हें एक बेहतर शिक्षक बनने में मदद करते हैं। स्वतंत्रता के बाद विभिन्न समितियों और आयोगों की रिपोर्टों ने शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए एक विशेष चिंता दिखाई है। जून 1966 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में शिक्षा आयोग ने सिफारिश की कि, "सेवाकालीन शिक्षा के बड़े पैमाने पर व्यवस्थित और समन्वित कार्यक्रम के आयोजन की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक शिक्षक कम से कम दो या तीन प्राप्त करने में सक्षम हो सके। हर पांच साल की सेवा में सेवाकालीन शिक्षा के महीने।" शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने सेवा-पूर्व चरण में जो कुछ सीखा है और वर्तमान में उनके द्वारा संचालित किए जाने वाले पाठ्यक्रम के बीच दिखाई देने वाली चौड़ी खाई को पाटें। आज एक भी शिक्षक इस बात से सहमत नहीं होगा कि सेवा-पूर्व शिक्षा उसके जीवन भर की व्यावसायिक क्षमता के लिए पर्याप्त है।[8]

4. प्रारंभिक शिक्षा

जब अपने लोगों को उच्च शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने की बात आती है, तो हर देश कुछ अलग दृष्टिकोण अपनाता है। बिना किसी प्रश्न के, समय और परिपक्वता के साथ शिक्षा का महत्व बदल जाता है। एक बच्चे के विकास के प्रारंभिक चरण में एक ठोस शैक्षणिक आधार की आवश्यकता को कम करके नहीं आंका जा सकता है। राष्ट्रों में शिक्षा प्रणालियों की तुलना करते समय, सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि सीखने के विभिन्न चरणों के अनुसार उन प्रणालियों को कैसे संरचित किया जाता है।

भारत में, हमारे पास तीन स्तरीय शिक्षा प्रणाली है जिसमें प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय और विश्वविद्यालय शामिल हैं। कक्षा I से कक्षा VIII तक भारत की प्राथमिक विद्यालय प्रणाली बनती है, जो 6-14 आयु वर्ग के छात्रों की सेवा करती है। इसे आगे दो चरणों में विभाजित किया गया है, पहला कवरिंग ग्रेड 6 से 8 (11 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए) और दूसरा कवरिंग ग्रेड 6 से 8 (6 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए)। यहां, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षक की तैयारी का मुख्य ध्यान ग्रेड I से V तक के छात्रों को निर्देश देने के लिए व्यक्तियों को तैयार करने पर है। इसके अलावा, आरटीई के 2009 के रोलआउट की तैयारी के लिए प्रारंभिक शिक्षा विभाग का नाम प्राथमिक शिक्षा विभाग से बदल दिया गया था। . शैक्षिक सीढ़ी के प्रत्येक चरण में शिक्षण भी अत्यधिक भिन्न होता है क्योंकि विकासात्मक स्तर, बच्चे के मनोवैज्ञानिक मेकअप और प्रत्येक स्तर पर पाठ्यचर्या संबंधी आवश्यकताओं में अंतर होता है। "3Rs," या पढ़ना, लिखना और अंकगणित,

मुख्य विषय हैं जिन पर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक ध्यान केंद्रित करते हैं।[9]

संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली प्राथमिक विद्यालय के वर्षों के कंधों पर टिकी हुई है। प्राथमिक कुछ राष्ट्रों में पसंदीदा शब्द है, जबकि प्राथमिक अधिक सामान्य है। इस स्तर पर आठ साल के अध्ययन की आवश्यकता है। यह वह जगह है जहाँ अच्छे शिष्टाचार, नागरिक मूल्य और व्यावहारिक ज्ञान सबसे पहले बोए जाते हैं। इस समय किए गए छापों के आजीवन प्रभाव असामान्य नहीं हैं। इस उम्र में बच्चे अक्सर कक्षा में प्रस्तुत की गई सभी सूचनाओं को आत्मसात करने के लिए उत्सुक रहते हैं। इसलिए, इस अवधि का वर्णन करने के लिए "फूलों का खिलना" का उपयोग किया जाना चाहिए।

5. भारत में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

5.1 स्वतंत्रता पूर्व काल में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

कई आयोगों और समितियों के निष्कर्षों में यह पाया गया कि इनसेट पर आजादी से पहले कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। हालांकि कुछ ब्रिटिश युग के नीतिगत कागजात शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए कुछ तीखे सुझाव देते हैं। सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में ही इन विद्वतापूर्ण प्रकाशनों ने असामान्य सावधानियों की सिफारिश की थी। यह सामान्य ज्ञान है कि आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली और विशेष रूप से INSET प्रणाली की नींव अंग्रेजों ने रखी थी। 1813 का ईस्ट इंडिया कंपनी चार्टर अधिनियम सार्वजनिक शिक्षा से संबंधित पहला प्रमुख ब्रिटिश विधायी अधिनियम था। निम्नलिखित नीति दस्तावेज 1854 का वुड्स डिस्पैच था, जो बदनाम हुआ। यह पेपर पूरे देश में सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता को पूरी तरह से संबोधित करता है। भारत में, शिक्षकों के लिए चल रहे पेशेवर विकास की आवश्यकता को मूल रूप से लॉर्ड कर्जन द्वारा लिखित एक नीति दस्तावेज में मान्यता दी गई थी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन स्कूलों में प्रशिक्षित प्रशिक्षकों को जिस तरह से पढ़ाया जाता है, वे अप-टू-डेट रहें, यह प्रस्तावित किया गया कि प्रशिक्षण संस्थानों और स्कूलों के बीच एक संबंध बनाए रखा जाए। इस निर्णय के फलस्वरूप माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को तैयार करने वाली संस्थाएँ बम्बई, कलकत्ता, जबलपुर और पटना में स्थापित हुई।[10]

5.2 स्वतंत्रता के बाद की अवधि में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

हालांकि, आजादी से पहले, इनसेट के विकास को बढ़ावा देने के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं किए गए थे। आजादी मिलने के बाद से इसमें काफी काम हुआ है। 1947 से, बोर्ड भर के स्कूलों में सुधार के लिए कई अन्य आयोगों और समितियों की स्थापना की गई है। इन पैनल ने हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए व्यवहार्य योजनाओं की सिफारिश की।

1947 से 1968 तक, हमने आज़ादी से पहले के वर्षों की शैक्षिक रणनीति का पालन किया, यहाँ और वहाँ कुछ ट्वीक के साथ। शुरू करने के लिए, 1948 में, G.O.I. एक प्रस्ताव पारित किया जिसे युग की पहली व्यापक शैक्षिक रणनीति माना जा सकता है। पूर्व भारतीय राष्ट्रपति डॉ. राधा कृष्णन ने 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की। हालांकि आयोग का प्राथमिक जोर उच्च शिक्षा पर था, इसने K-12 और संकाय विकास को भी संबोधित किया। पैनल ने समझा कि उच्च शिक्षा सुधार के सफल होने के लिए माध्यमिक विद्यालय सुधार आवश्यक था। इसलिए, इस समिति ने औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर बात करके शुरुआत की। आयोग द्वारा यह निर्धारित किया गया था कि शिक्षकों की क्षमता शैक्षिक परिणामों में एक प्रमुख योगदानकर्ता है, और यह कि शिक्षकों की प्रभावशीलता बढ़ाने से समग्र शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि होगी।[11]

6. धारणा और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध

धारणा और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच एक जटिल और बहुआयामी संबंध है। धारणा से तात्पर्य है कि व्यक्ति अपने आसपास की दुनिया की व्याख्या और अर्थ कैसे निकालते हैं, जिसमें उनके प्रभाव और दूसरों के निर्णय शामिल हैं। शिक्षा के संदर्भ में, छात्रों, अभिभावकों, सहकर्मियों और प्रशासकों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन और प्रतिक्रिया करने में धारणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[12]

धारणा शिक्षक की प्रभावशीलता को कई तरह से प्रभावित कर सकती है:

i. छात्र धारणा: अपने शिक्षकों के बारे में छात्रों की धारणा का उनके जुड़ाव, प्रेरणा और सीखने के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। जब छात्र अपने शिक्षकों

www.ignited.in

को जानकार, देखभाल करने वाले और सहायक के रूप में देखते हैं, तो उनके सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने और अकादमिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करने की संभावना अधिक होती है। शिक्षकों की सकारात्मक धारणा एक अनुकूल कक्षा के माहौल को बढ़ावा दे सकती है, सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा दे सकती है और समग्र सीखने के अनुभव को बढ़ा सकती है।

ii. माता-पिता की धारणा: शिक्षकों के प्रति माता-पिता की धारणा शिक्षा प्रणाली में उनके भरोसे और भरोसे के स्तर को आकार दे सकती है। सकारात्मक धारणाओं से माता-पिता की भागीदारी, समर्थन और शिक्षकों के साथ सहयोग बढ़ सकता है, जो बेहतर छात्र परिणामों में योगदान दे सकता है। दूसरी ओर, नकारात्मक धारणाओं से अलगाव, सहयोग की कमी, या शिकायतें और संघर्ष भी हो सकते हैं जो शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकते हैं।

iii. सहकर्मी धारणा: अन्य शिक्षकों और प्रशासकों सहित सहकर्मियों की धारणा भी शिक्षक की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकती है। सहकर्मियों के बीच सकारात्मक धारणा एक सहयोगी और सहायक पेशेवर वातावरण को बढ़ावा दे सकती है, जहां शिक्षक एक दूसरे से सीख सकते हैं, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा कर सकते हैं और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक धारणा या सहकर्मियों से समर्थन की कमी पेशेवर विकास, सहयोग और शिक्षक की समग्र प्रभावशीलता में बाधा बन सकती है।

iv. प्रशासक की धारणा: शिक्षकों के बारे में प्रशासकों की धारणा विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर सकती है, जैसे मूल्यांकन, व्यावसायिक विकास के अवसर और करियर में उन्नति। जब प्रशासक शिक्षकों को प्रभावी, जानकार और समर्पित के रूप में देखते हैं, तो उनकी भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उन्हें आवश्यक संसाधन, मान्यता और समर्थन प्रदान करने की अधिक संभावना होती है। इसके विपरीत, प्रशासकों की नकारात्मक धारणाएं विकास और उन्नति के सीमित अवसर पैदा कर सकती हैं, जिससे शिक्षक प्रेरणा और प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है।[13]

7. निष्कर्ष

शिक्षा स्नातक (बी.एड.) डिग्री अर्जित करने वाले प्रशिक्षु प्रशिक्षकों का परिप्रेक्ष्य और जागरूकता स्तर शिक्षकों के रूप में उनकी प्रभावशीलता को विकसित करने में महत्वपूर्ण हैं। इस शोध ने प्रशिक्षु प्रशिक्षकों की राय और जागरूकता के स्तर में अंतर्दृष्टि प्रदान की, अच्छी सुविधाओं और विकास के लिए स्थानों की पहचान की। भविष्य की पीढ़ियों को ढालने में अपने व्यवसाय के महत्व को पहचानते हुए, प्रशिक्षु शिक्षकों की शिक्षकों के रूप में उनकी नौकरी के बारे में अनुकूल राय थी। यह अच्छी राय उनके शिक्षण करियर के लिए एक आशाजनक शुरुआती बिंदु है। हालाँकि, अनुसंधान ने शैक्षिक प्रथाओं और वर्तमान चुनौतियों की उनकी समझ की डिग्री में अंतर का संकेत दिया।

8. संदर्भ

1. गोगटे, एस.बी. (2017)। सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का प्रशिक्षण। पुणे: क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान।
2. बापना, यू. (2017). प्रभावी स्कूल प्रबंधन के लिए राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालयों के प्रमुखों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन। नई दिल्लीः एनयूईपीए.
3. गोविंदा और पाल, सी.एच. (2016)। शिक्षक: पेशेवर और परिप्रेक्ष्य। भारतीय शिक्षा जर्नल, 24(2),42-43।
4. देवराज, डी.के., और पवनसम, आर. (2018)। कोयम्बटूर जिले में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सेवाकालीन शैक्षिक आवश्यकताएं। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, 24(8), 28-36।
5. इलाही, एन। (2015)। एस.सी.ई.आर.टी. के सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का एक आलोचनात्मक अध्ययन। शिक्षा में पीएचडी थीसिस, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
6. धर, एन. (2019). शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षाः कुछ विचार। इंडियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 2(1), 10-11।
7. करिकुझी, एस. (2020). मलप्पुरम जिले के माध्यमिक विद्यालयों के गणित शिक्षकों की सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यकताओं का एक अध्ययन। शिक्षा में एमएड शोध प्रबंध, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट।
8. अहमद, जे. (2020). कर्नाटक में बैंगलोर के शहर जिले में अल्पसंख्यक भाषा प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के प्रमुखों की प्रशिक्षण

आवश्यकताओं का आकलन करना। नई दिल्लीः एनयूईपीए.

9. ईश्वरन, एस., और सिंह, ए. (2018)। शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन। नई दिल्लीः ऑल इंडिया प्राइमरी टीचर्स फेडरेशन।
10. डायमंड, पी। (2016)। परिवर्तन के रूप में शिक्षक शिक्षा। फिलाडेल्फिया: ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. गफूर, ए.पी.के. (2016)। शिक्षा एवं प्रशिक्षण के जिला संस्थानों के कामकाज और कार्य कुशलता का एक महत्वपूर्ण अध्ययन। शिक्षा में पीएचडी थीसिस, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट।
12. बोलम, आर। (2015)। व्यावसायिक विकास और स्कूल सुधार के लिए INSET। ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ इन-सर्विस एजुकेशन, 9(1), 14-17।
13. अग्रवाल, जे.सी. (2018)। भारत में शिक्षकों की भूमिका की स्थिति, सेवा की शर्तें और शिक्षा: समितियों और आयोगों के विशेष संदर्भ के साथ एक संदर्भ मैनुअल। नई दिल्लीः दोआबा हाउस।

Corresponding Author

Ritu Chauhan*

Research Scholar, The Glocal University Saharanpur, UP